छोटी–सी हमारी नदी (कविता)

शब्दार्थ
ढोर–डंगर –जानवर
घाम – धूप
पेटे – नदी के तल में
सघन – बहुत घना
सांझ सकारे – सुबह शाम
पारो –किनारो
पाट – फैलाव
झकाझक– चमकीला
डार डार –डाली डाली
अमराई–आम के पेड़ों की बगिया
बम्हन टोला –ब्राह्मणों की बस्ती
नदिया –छोटी नदी
छाना –जाल या छन्नी
घिरनी –चरखी
रोला– शोरगुल
दन्नाती – दन्न की आवाज करती हुई कछार –नदी के किनारे की जमीन
भंवर –तेज़ लहरों से पानी में बनने वाला गहरा गोला

आशय स्पष्ट कीजिए।
क) छोटी सी हमारी नदी……. पाट इसका ढालू ।
अर्थ – हमारी नदी छोटी है और इसकी धार टेढ़ी-मेढ़ी है। गर्मी के दिनों में इसमें घुटने तक पानी होता है। इसे पार करना सबके लिए आसान होता है। चाहे वह आदमी हो या जानवर या बैलगाड़ी। इस नदी के किनारे ऊंचे हैं और इसके पाट ढलान से भरे हैं।

ख) पेटे में झकाझक बालू ……कर उठते सियार।
अर्थ – नदी के तल में बालू कीचड़ का नामोनिशान नहीं है। कांस के फूल खिलने पर धूप जैसे सफेद दिखते हैं। इसकी डालियों पर मैना दिनभर किचपिच–किचपिच की आवाज़ करती रहती है। रात के समय सियार हुँआ–हुँआ करते हैं।

ग) अमराई दूजे किनारे……. अंग अंग पर ढालें।
अर्थ – कवि कहते हैं कि इसके दूसरे किनारे पर आम और ताड़ के पेड़ हैं। उन्हीं की छांह में ब्राह्मणों का टोला बस है। उनके छोटे-छोटे बच्चे किनारो पर उछल-उछलकर नहाते हैं। वह गमछो में पानी भर–भर कर अपने शरीर पर डालते हैं।

प्रश्न अभ्यास **:–**

1. तुम्हारी परिचित नदी के किनारे क्या-क्या होता है?
   उत्तर – मेरी परिचित नदी के किनारे एक मंदिर है। नदी में नहाने के बाद लोग पानी भरकर उसे मंदिर में ले जाकर पूजा करते हैं । गांव के बच्चे नदी में जाकर बहुत उछल कूद करते हैं। नदी में बहुत सी नावें भी होती हैं, जो लोगों को इस पार से उस पार ले जाती है।

2. गांव की औरतें नदी में जाकर क्या–क्या करती हैं ?
3. आषाढ़ का महीना आने पर नदी में क्या बदलाव देखने को मिलता है?
4. “छोटी सी हमारी नदी” कविता के कवि कौन हैं?
5. बच्चे नदी में जाकर क्या–क्या करते हैं?